शिव-गरिमा

काशी शिवपुरी आश्रम की मासिक ई–पत्रिका

प्रवेशांक : माह-जनवरी 2023

आशीर्वाद :

प.पू. परमहंस स्वामी सुगंधेश्वरानंद, राजयोगी प्रभु बा

प्रकाशक : एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट

सद्गुरु परम्परा

1854–1914

प. पू. परमहंस श्री वासुदेवानंद सरस्वती (टेम्बे स्वामी महाराज)

आप महाराष्ट्र में टेम्बे स्वामी के नाम से विख्यात रहे हैं। आपकी भक्ति, साधना और व्याकुलता से अभिभूत भगवान दत्तात्रेय ने आपको नृसिंहवाड़ी में प्रत्यक्ष दर्शन दिए तथा स्वप्न में ब्रह्ममुहूर्त में मंत्रदीक्षा प्रदान की। सम्पूर्ण भारत में आप एक कर्मठ योगी के रूप में जाने जाते हैं। आपने तीन बार पावन नर्मदा नदी की पद–परिक्रमा की थी। आपके द्वारा रचित 'करुणा त्रिपदी' आज भी असंख्य दत्तभक्तों को संकटमोचक स्वरूप में उपलब्ध है। आपने आजीवन परिव्राजक बनकर दत्तभक्ति का प्रचार–प्रसार किया था।

1892–1955

प. पू. श्री लोकनाथ तीर्थ (स्वामी महाराज)

बाल्यकाल में आप माँ ढाकेश्वरी के अनन्य भक्त थे। संन्यास दीक्षा के बाद आप स्वामी चिन्मयानंद के रूप में जाने गए। सन् 1927 में स्वामीजी ने दण्ड धारण किया तब से आप लोकनाथ तीर्थ स्वामी के रूप में विख्यात हुए थे। आप आजीवन एक निस्पृह एवं स्वतंत्रचेता के रूप में रहे। विद्वता व पात्रता के आधार पर आपको काशी के सिद्धयोगाश्रम का उत्तराधिकारी बनाने का प्रस्ताव आया किंतु आपने विनम्रता से अपना आध्यात्मिक मंतव्य बता दिया और शक्तिपात परम्परा का परिचय साधकों को कराने हेतु भ्रमण करते रहे ।

1889–1974

प. पू. सद्गुरु योगीराज श्री वामनदत्त (गुळवणी महाराज)

आप एक उत्कट भावपूर्ण साधक रहे हैं। अपने आध्यात्मिक मार्गदर्शन हेतु प.पू. टेम्बे स्वामी महाराज की खोज के लिए आपने बहुत परिश्रम किया। टेम्बे स्वामी महाराज ने इन्हें दीक्षा प्रदान की। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध इन संत का संबंध कुडुत्री, तारळा, कोल्हापुर, मुम्बई, गाणगापुर, बाशी, होशंगाबाद आदि से भी रहा है। होशंगाबाद में ही आपको प. पू. लोकनाथ तीर्थ स्वामी से शक्तिपात दीक्षा हुई थी। अपने सद्गुरु टेम्बे स्वामी महाराज के आदेश से ही स्वामी महाराज से भी दीक्षित हुए। बाद में आप पूना पधार गए। यहीं पर आपने योग–विद्या के बल से स्वयं को अनिकेत सिद्ध किया व वैरागी हो गए। पूना में 'वासुदेव निवास' आपके ही सद्प्रयासों से निर्मित परम्परा साधकों का तीर्थराज है। आपने अनेक साधकों को शक्तिपात दीक्षा दी व कतिपय को गुरुत्व पद प्रदान किया। परमहंस पूज्य प्रभु बा को भी उनसे ही दीक्षा एवं यह पद प्राप्त हुआ है।

1924–2008

प. पू. स्वामी शिवोम् तीर्थ महाराज

स्वामी शिवोम् तीर्थ जी महाराज का पूर्वाश्रम का नाम ओम प्रकाश था। उनका जन्म सन् 1924 में लाहौर में भारद्वाज गोत्रीय कपूरिया पंजाबी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनका परिवार अध्यात्म की और उन्मुख था विशेषकर माँ भक्ति परायणा थी। उन्हीं का प्रभाव स्वामी 'शिवोम्' पर अधिक पड़ा था। स्वामी शिवोम् में बचपन से ही संसार के प्रति विरक्ति के भाव जाग्रत हो गए थे।

पूज्य परमगुरुदेव स्वामी विष्णुतीर्थ जी महाराज के प्रथम दर्शन के साथ ही गुरुदेव स्वामी शिवोम् तीर्थजी महाराज सदैव के लिए उन्हीं की शरण में आ गए। गुरुदेव स्वामी शिवोम् तीर्थ जी महाराज सिद्ध शक्तिपातावार्य थे। वे जीवन भर परमार्थ के लिये जिये। शक्तिपात दीक्षाओं के माध्यम से उन्होंने अनेकानेक भक्तों का कल्याण किया।

परमहंस परमपूज्य राजयोगी प्रभु बा को भी इन्ही से संन्यास दीक्षा (14/01/1994) प्राप्त हुई है।

सद्गुरु-संदेश

मेरे सभी प्यारे साधकों को जय श्रीकृष्ण और अनेक अनेक शुभ आशीर्वाद।

स्वामी गुरुराजेश्वरानंदजी जिनके प्रामाणिक प्रयास और शुद्ध उद्देश्य की वजह से इस पत्रिका का शुभारंभ हो रहा है उन्हें भी बधाई और अनेक अनेक शुभ आशीर्वाद।

व्यक्तिगत स्तर पर मैंने तो जीवन भर अपने सदगुरुदेव के आदेश की पालना को ही साधक धर्म माना है। सद्गुरु को ही अपना सबकुछ माना है। सदगुरुदेव ही शिव है ये जाना है। उनसे बढ़कर कोई तपस्वी, योगी, ध्यानी, ज्ञानी, भक्तवत्सल, करुणामय और दयालु हो ही नहीं सकता।

मैंने तो केवल उनके द्वारा दिय गये साधन और मंत्र रूपी डोर का सिरा थामा है। बाकी ना तो हमने कोई पठन किया है ना अध्ययन। जो सदगुरुदेव ने जनाया उससे अधिक कुछ जानने की कोशिश ही नहीं की। किसी अन्य ग्रंथ, पंथ अथवा महापुरुष की तरफ ध्यान ही नहीं गया, ना ही कभी इसकी आवश्यकता ही महसूस हुई।

एक तो एक ही। ये एक ही पूर्ण है, पर्याप्त है।

इस पत्रिका के माध्यम से अपने सभी साधकों से भी यही कहेंगे कि इस मार्ग मे कुछ पाना हो, अनुभव करना हो तो सदगुरु के प्रति पूर्ण निष्ठा और विश्वास रखना होगा। वर्तमान समय में प्रश्न, तर्क, शंका इन तीनों को ज्ञान पाने हेतु अतिआवश्यक समझा जाता है। मान्यता है कि जो भी तथ्य अथवा बात रखी जाए उसका अति विश्लेषण हो फिर ही स्वीकारा जाए।

भौतिक जगत में यह उपयुक्त भी होता होगा पर साधन जगत् में तो इनका कोई स्थान ही नहीं है। यहाँ तो 'गुरुवाक्यम् सदा सत्यं' यही एक नियम है। पहले अनुसरण करो फिर अनुभव करो। अपने प्रश्नों का, शंका का उत्तर, समाधान अपने भीतर खोजो और भीतर ही पाओ। अपना समय व्यर्थ के तर्क और विश्लेषण अथवा चर्चा में ना गंवाकर साधन में लगाओ। तभी एक एक सीढ़ी उपर चढ़ोगे। ज्ञानी बनने से अच्छा है ध्यानी बनो। विशेष बनने की चाह छोडकर सहज सरल और साधारण बने रहो। बस नित्य नियम से ध्यान और जप करो। बाकी सदगुरुदेव पर छोड़ दो।

यह पत्रिका 'शिव-गरिमा' आपको अपने आध्यात्मिक लक्ष्य को पाने में मदद करे इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पुनः एक बार अनेक अनेक शुभआशीर्वाद।

– आपकी अपनी बा

सहज अभिव्यक्ति

जयश्री कृष्ण।

सद्गुरु परंपरा की महत्ती कृपा है कि हमें प.पू. परमहंस राजयोगी प्रभु बा ने वासुदेव कुटुंब का अभिन्न अंग बनाकर आध्यात्मिक दिशा देना स्वीकार किया है। हरेक साधक व भक्त के लिए यह अपने आप में गौरवशाली अनुभूति है।

एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट, काशी शिवपुरी द्वारा समय-समय पर कई प्रकाशन होते रहे हैं। इनका उद्देश्य साधकों को साधन हेतु प्रेरित करना रहा है। इस कड़ी में हमें निरंतर अद्यतन रखने के लिए शिव-सुगंध (अनियतकालीन) व शिव-प्रवाह (मासिक) पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिकाएं रही हैं। समय, परिस्थिति व संसाधन बदलने के साथ-साथ संप्रेषण की प्रक्रियाओं में भी परिवर्तन अवश्यंभावी होते रहते हैं। इसी भाव से हमारे सद्गुरु प्रभु बा (स्वामी सुगंधेश्वरानंदजी) के शक्तिपात दीक्षा के 48 वर्ष पूर्ण होने पर आश्रम द्वारा एक नई ई-पत्रिका 'शिव-गरिमा' का मासिक प्रकाशन प्रारंभ किया जा रहा है। यह पत्रिका मुद्रित नहीं होकर इंटरनेट के विविध माध्यमों से साधकों व पाठकों तक पहुंचेगी। सद्गुरुदेव ने स्वयं इसका नामकरण किया है। शिव-गरिमा शब्द में गरिमा शब्द के अनेक अर्थ हैं। यह शब्द महिमा, महत्व व गौरव का प्रतीक है। एक अर्थ में यह आठ सिद्धियों में से एक है जिसका आशय है अपना गुरुत्व या भारीपन अभिवर्धित करने की क्षमता। इस शिव-साधन-मार्ग पर हम अपना आध्यात्मिक भार बढ़ाकर सद्गुरुदेव द्वारा इंगित मार्ग पर गतिशील रहें, यह भी संदेश निहित है।

प्रयास यही रहेगा कि हर माह की 15 तारीख तक 'शिव-गरिमा' आपके पास हो। पत्रिका में कई स्थायी स्तंभ प्रारंभ किये जा रहे हैं। इसके लिए आप अपने साधन के अनुभव, अपनी कोई जिज्ञासा या अनुभूत आध्यात्मिक विचार जो अपनी परंपरा से जुड़े हों, प्रकाशन के लिए भेज सकते हैं। उपयुक्तता होने व सद्गुरुदेव से सहमति मिलने पर उन्हें संपादित कर समाविष्ट किया जा सकेगा। 'शिव-गरिमा' केवल एक पत्रिका न होकर आश्रम का मुखपत्र भी है और साधकों की अभिव्यक्ति का अवसर भी। इस प्रवेशांक (अंक जनवरी-2023) के संबंध में आपके विचार व सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

अंत में सद्गुरु-परंपरा, सद्गुरु राजयोगी प्रभु बा के आशीर्वाद, गुरुपुत्र श्री दत्तप्रसादजी, स्वामी श्री हृदयानंदजी की शुभकामनाओं तथा साधक श्री प्रमोदजी सोनी के सहयोग के लिए आभार व्यक्त करते हुए आपके विचारों को जानने की उत्सुकता के साथ।

आपका ही
स्वामी गुरुराजेश्वरानंद

ध्यान

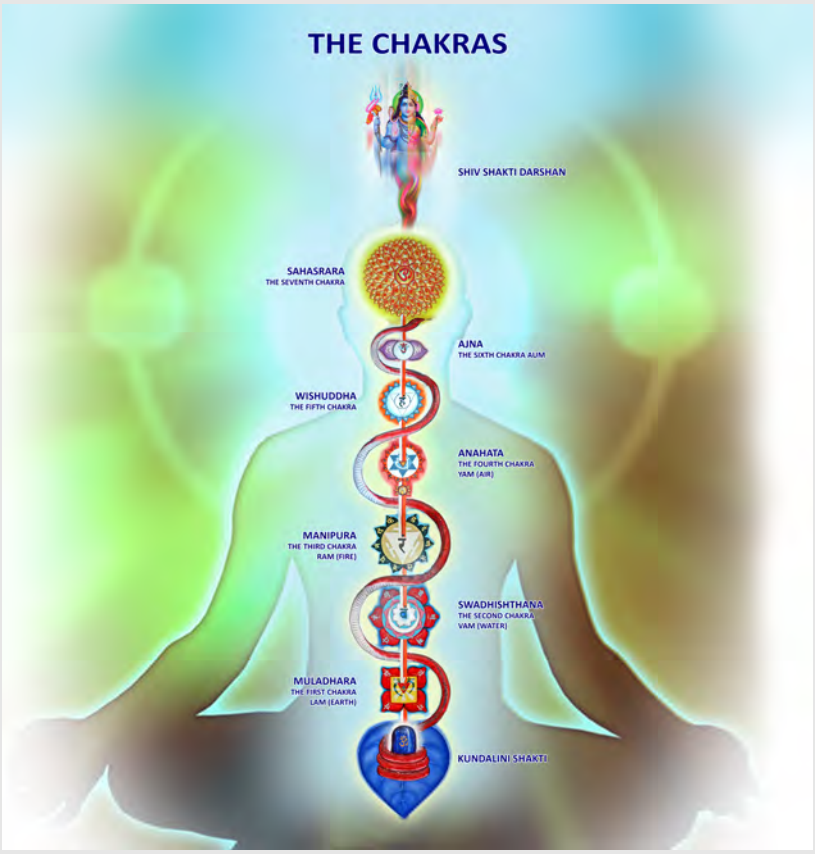

ध्यान अध्यात्म क्षेत्र की जानी-मानी एवं सर्व स्वीकार्य प्राचीनतम विधि है। हम बाह्य संसाधनों के अलावा भीतरी शक्ति जागृत कर कैसे अपने आप को साध सकते हैं, यही ध्यान की प्रक्रिया है। ध्यान से चेतनता जागृत होकर विचारों की अनुपस्थिति होती है यह भी ध्यान का एक उद्देश्य है। शक्तिपात साधना में ध्यान का अत्यंत महत्व है। हमारे सद्गुरु प.पू. राजयोगी प्रभु बा का साधन में ध्यान व जप पर विशेष आग्रह है। ध्यान व जप वे दो पैर हैं जिनसे चलकर कोई भी साधक लक्ष्य तक पहुंच सकता है। जिसमें लक्ष्य तक जाने की प्रबल उत्कंठा जग जाती है वह ध्यान और जप को पंखों की तरह भी प्रयोग करते हुए लक्ष्य को त्वरित प्राप्त कर सकता है।

प्रभु बा के अनुसार ध्यान कोई विशेष क्रिया या अभ्यास नहीं होकर नैसर्गिक गुणधर्म है। ध्यान, साधन की उत्तमावस्था है, इसमें अक्रियता में जाना है। यहां यह समझने की बात है कि अक्रियता व निष्क्रियता ये दो भिन्न अर्थ वाले शब्द हैं। निष्क्रियता में ध्यानी साधक स्वयं को बलपूर्वक क्रिया-निषेध की ओर ले जाता है जबकि अक्रियता में कोई भी क्रिया स्वतः लुप्त होने लगती है, यहां तक कि विचार भी।

यद्यपि प्रारंभ में कुछ सावधानियों का पालन करना होता है पर उन्हें क्रिया की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है। इसके लिए प्रभु बा ने अपने साधकों के लिए एक पद्धति भी निर्धारित की है। सद्गुरु परंपरा का आशीर्वाद लेकर उनके द्वारा साधक को शक्ति से युक्त किया गया एक आसन ध्यान व अन्य साधन के समय बैठने के लिए दिया जाता है। इसे सामान्य अर्थ में सद्गुरु की गोद भी कहा जा सकता है। ध्यान के समय आसन पर बैठते ही आभास होने लगता है कि साधक सद्गुरु के सान्निध्य में ध्यान में उतरने जा रहा है। फिर सांसों को साधते हुए गहरी सांसें लेने का क्रम आता है। अपनी आंखें बंद करके आज्ञाचक्र पर दृष्टि को केन्द्रित करना होता है। सांस को आते-जाते द्रष्टाभाव से बस देखना भर है।

पूर्व ज्ञान के कारण हो सकता है कि इस अवस्था में अपने ईष्ट, आराध्य, सद्गुरु या अन्य मार्गदर्शक की छवि दिखाई दे। सांस के साथ ध्यान मंत्र का जाप चलता रहे तो धीरे-धीरे ये छवियां अदृश्य होने लगेंगी। यहां तक कि मंत्र भी छूटने लगेगा। अपने भीतर दृष्टि जाते ही हो सकता है कि आज्ञाचक्र जाग्रत भी होने लगे। अब विचार स्तंभित होकर छूटने लगते हैं। एकप्रकार से कहें तो आत्मावलोकन चल पड़ता है। यह भी छूटने लगे तो ध्यान गहराता चला जाता है। भीतर ही भीतर आनंद जैसा अनुभव होने लगता है। ये ध्यान की सामान्य एवं प्रारंभिक दशाएं हो सकती हैं।

नियमित ध्यान करते रहने से कई प्रकार के सद् अनुभव आने लगते हैं (इसका यह भी अर्थ न लें कि अनुभव आना अनिवार्य ही है)। मन व तन को एक विशिष्ट प्रकार की ऊर्जा मिलने लगती है। प.पू. प्रभु बा का कहना है कि प्रतिदिन सुबह-शाम एक-एक घंटा नियमित ध्यान करते-करते जब 100 घंटे पूरे हो जाएं तब ध्यान सधने लगता है। फिर साधकों को अपने-अपने ढंग से अद्भुत अनुभूतियां होने लगती हैं।

ध्यान के लिए कुछ और बातें भी जानने की हैं। इसके लिए स्थान का चयन भी अनुकूल हो। यदि घर में प्रतिदिन किसी निर्धारित स्थान पर ही बैठा जाये तो लाभ ही होगा। आसन को प्रणाम करके ध्यान के लिए बैठना व समापन पर भी आसन को नमन करना साधक का दायित्व है। यदि कोई पालथी या पद्मासन अवस्था में नहीं बैठ पाये तो कुर्सी, सोफा या पलंग पर भी बैठा जा सकता है किंतु सावधानी रहे कि पैर जमीन से सीधे संपर्क में न रहें। कोई ऊनी कपड़ा पैरों के नीचे रखा जा सकता है।

ध्यान निर्धारित अवधि से बहुत ज्यादा नहीं करना है। ध्यान से पूर्व शुचिता का उपक्रम अवश्य हो किंतु स्नान करने की बाध्यता नहीं है। जब प्रवास पर हों या कार्यस्थल पर हों और ध्यान का समय हो जाए तो वहां ध्यान करना उचित नहीं है। हां, ठीक स्थान पर जाकर बाद में भी किया जा सकता है। ध्यान में अनुभव आना ही उसकी सिद्धि नहीं है किंतु अनेक बार अनुभव आते भी हैं। जब भी कोई अनुभव आए तो उसे सार्वजनिक रूप से प्रकट करने की बजाय सद्गुरुदेव या उनके द्वारा अधिकृत किसी साधक को सर्वप्रथम सुनाना उचित है। बाद में उनकी अनुमति से सबको भी बताया जा सकता है। ध्यान कोई लीकबद्ध प्रक्रिया नहीं है इसलिए सबके अपने निजी व भिन्न अनुभव आना स्वाभाविक है। यह सब करते हुए ध्यान को गहरा-गहरा करते जाना है। हालांकि उक्त जानकारियां सामान्य हैं किसी विशेष दशा के लिए नहीं हैं। हां, ध्यान कैसा भी व कितना भी लगे आसन पर तो नियमित बैठना ही है।

प्रभु बा का अनुभव

मैं पूज्य गुरुदेव के दर्शन करके दीक्षा पत्र लेकर पूना से मुम्बई लौटी तो मन में बड़ा उल्लास था कि मुझे आध्यात्मिक राह मिल गई है। गुरुदेव ने 7 जनवरी को दीक्षा-पत्र खोलकर बैठने के लिए बताया था। जल्दी ही वह दिन भी आ गया। मेरा मन उमंगित था। परिवार संयुक्त था और जिम्मदारियां भी पूरी थी अतः 7 तारीख को सुबह ध्यान के लिए बैठना नहीं हो पाया। शाम को बैठने का तय किया। संध्याकाल में भाऊ साहब (पतिदेव) आए तो बोले कि हमें आज एक इंगलिश मूवी देखने चलना है। मैं बड़ी ऊहापोह में पड़ गई। आज ही तो ध्यान के लिए बैठने का अवसर है। इधर नव आध्यात्मिक यात्रा के शुभारंभ की बात थी तो दूसरी ओर पतिदेव की आज्ञा का पालन। इसी

असमंजस में मैंने कहा-आज तो हमें ध्यान में बैठना है फिर सिनेमा देखने जाना कैसे संभव होगा? भाऊ साहब जिस ढंग से जल्दी कर रहे थे उससे मैं घबरा गई पर जब उन्होंने कहा कि रात 9 बजे के टिकट हैं तो मैंने मन ही मन गुरुदेव को धन्यवाद दिया। प्रसन्नता यह थी कि ध्यान भी हो जाएगा और बाकी जो समय मिलेगा उसमें शाम का खाना भी बना लूंगी और अंत में भाऊसाहब की इच्छा भी पूरी हो जायेगी। मेरी सारी रुचि ध्यान में बैठने में थी इसलिए गुरुकृपा से सारी व्यवस्थाएं अनुकूल ही होती जा रही थी।

सायं 6 बजे ध्यान के लिए बैठी। गुरुदेव ने जो दीक्षा-पत्र दिया था उसे खोला और पढ़ा। मन में खुशी

इतनी थी कि न तो बताये अनुसार तीन गहरी सांस लेकर ध्यान प्रारंभ करना याद रहा और न ही मंत्र का स्मरण। बस आंखें बंद करके बैठ गई। आसन पर बैठते ही कुछ ही पलों में मुझे ऐसे लगा मानो किसी ने मुझ पर जोर से प्रहार किया है। उस प्रहार के फलस्वरूप मेरा सिर भारी होने लगा और आंखें भी बोझिल सी होने लगी। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था पर अच्छा ही लग रहा था। ध्यान में ऐसा लगा कि मैं गतिमान हो गई हूं। जैसे रेलगाड़ी तेज गति में चलती है, ठीक वैसे ही। रास्ता स्वयं दौड़ते हुए मानो मेरी तरफ आ रहा हो। तभी लगा कि कोई गुफा मेरी ओर तेजी से भागी चली आ रही है। थोड़ी ही देर में वह गुफा मेरे

शरीर में समाती सी लगने लगी। टकराहट के कारण उस गुफा का मलबा मेरे ऊपर गिरने लगा और मैं उस मलबे में दब सी गई। सांस लेने में भी कठिनाई का एहसास हो रहा था। मुझे कुछ सूझ नहीं रहा था पर मैं निरंतर सद्गुरु को याद करती जा रही थी। मेरे मुंह से हे गुरुदेव, हे गुरुदेव की ध्वनि ही निकल रही थी। भय भी लगा पर जैसे ही अनुभव हुआ कि गुरुदेव हैं न, तो भय जाता रहा। कुछ देर बाद वह मलबा अपने आप हटने लगा। मैं उससे बाहर निकली तो चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश दिखाई दिया। यह प्रकाश इतना तीव्र था जैसे हजारों बल्ब एक साथ जला दिए गए हों। ऐसा दिव्य प्रकाश मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा था। अब सारा मलबा भी साफ हो चुका था। उस प्रकाश में आनंद का अनुभव हो रहा था।

यह सारा अनुभव कोई 15–20 मिनट तक चला। थोड़ी ही देर में ध्यान खुल गया। पूरे एक घंटा बैठना नहीं हुआ। इस अनुभव के मारे मन में प्रसन्नता का पारावार न था। अनुभव की मग्नता में ही जल्दी–जल्दी घर की रसोई का काम निपटाया। मेरे पहली बार के ध्यान और दीक्षा का रस इतना मधुर था कि सिनेमा देखने जाने का मन कतई नहीं था। पहले ही अनुभव की आनंदानुभूति के आगे सांसारिक कार्य बौने से लग रहे थे। संसार में रहते हुए कैसे आध्यात्मिक लक्ष्य की ओर बढ़ा जा सकता है शायद गुरुदेव ने यही अनुभूति करवा दी। मेरा ध्यान का प्रथम अनुभव था जो मैं साधकों के साथ साझा कर रही हूं।

विशिष्ट साप्ताहिकी

सद्गुरु राजयोगी प्रभु बा के आध्यात्मिक व लौकिक दोनों ही स्वरूप विलक्षण हैं। एक ओर सद्गुरु परंपरा, दत्त-संप्रदाय की गरिमा, ध्यान व जप की महिमा, पूजन-यज्ञ-हवन आदि सद्कर्मों के महत्व का प्रतिपादन पूरे विधान व मनोयोग से है तो दूसरी ओर साधकों के पारिवारिक प्रसंगों पर ठेठ अपनेपन का अनूठा अंदाज।

ऐसा ही एक अवसर काशी शिवपुरी में 19 नवम्बर से 28 नवम्बर 2022 तक उल्लास व शुभ-प्रसंग की प्रसन्नता लेकर आया। मौका था आश्रम के ट्रस्टी व रायपुर के साधक श्री विजयजी बुधिया व श्रीमती

कविताजी की सुपुत्री प्रिय अनुष्का व उदयपुर के साधक श्री रामदासजी व श्रीमती सुधाजी बघेल के सुपुत्र प्रिय रवि के विवाहोत्सव का। गुरुदेव ने इस अवसर को आध्यात्मिक रंग में रंगकर यादगार बना दिया तो दोनों परिवारों ने भी सद्गुरु आस्था को सिद्ध किया। 19 से 26 तारीख तक गुरुदेव की सतत उपस्थिति में अखंड नाम जप साप्ताहिकी का आयोजन हुआ जिसमें दोनों परिवार परिजनों सहित पूरी क्षमता से लगे। अन्य साधकों ने भी सहभागिता निभाई। 27 व 28 नवम्बर को विवाहोत्सव हुआ। इससे पूर्व हल्दी, मेहंदी, गणपति

स्थापना आदि रस्में भी स्वयं गुरुदेव के सान्निध्य में संपन्न हुई। संगीत संध्या व सगाई रस्म के बाद वैदिक विधि से परिणय विधान भी अत्यंत आह्लादकारी रहा। शिवपुरी की साजसज्जा को नूतन आयाम देते हुए दोनों परिवार पूर्ण श्रद्धाभाव से जुटे। सद्गुरु प्रभु बा के साथ सैंकड़ों साधकों ने इस प्रसंग को विराट बना दिया।

एक और साप्ताहिकी

श्री दत्तात्रेय जयंती से पूर्व 30 नवम्बर 2022 को अखंड नाम जप साप्ताहिकी प्रारंभ हुई। परंपरानुसार श्री गणेश, श्री तुलजा भवानी व श्री सद्गुरु परंपरा की वंदना करते हुए आह्वान किया गया व 'ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र की धुन प्रारंभ हुई। इस साप्ताहिकी के आयोजक तलवाड़ा राजस्थान के केन्द्र संचालक व साधक श्री कृष्णकांतजी पंड्या व श्रीमती हेमलताजी रहे। प्रतिदिन सत्संग व भजनों का दौर आनंददायक रहा।

दत्त जयंती का वासुदेव कुटुम्ब में बहुत बड़ा महत्व है। हम सभी दत्त संप्रदाय के अनुयायी हैं। काशी शिवपुरी आश्रम की पहली वास्तुरचना भी दत्त मंदिर है। गुरुपूर्णिमा से दत्त जयंती तक प्रति वर्ष हरेक साधक सद्गुरु संकल्प का संकेत पाकर पंचाक्षरी मंत्र का जप करता है तथा उन्की गणना को संकलित करते हुए प्रति सप्ताह आश्रम में प्रेषित भी करता है। इन सबका योग करके दत्त जयंती पर 7 दिसम्बर 2022 को इस संख्या के दसांश को यज्ञ के द्वारा साधकों द्वारा आहुतियां भी दी गईं। इस बार गुरुदेव ने साधकों के सहयोग से 101

दत्त जयंती : शिवपुरी

करोड़ मंत्र जाप का संकल्प लिया था। अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि यह संख्या 126 करोड़ से ज्यादा हुई।

विराट निःशुल्क चिकित्सा शिविर

हर साल चैतन्य दिवस साप्ताहिकी पर या उससे पूर्व आदरणीय पव्वी भैया के पूज्य पिताश्री स्वर्गीय भाऊसाहब यशवंतजी त्रिवेदी की स्मृति में विराट निःशुल्क चिकित्सा शिविर काशी शिवपुरी आश्रम द्वारा आयोजित किया जाता है। इस बार यह 18 दिसम्बर 2022 को संपन्न हुआ। इस शिविर में करीब 25 गांवों के कुल 1300 विविध प्रकार के रोगियों की चिकित्सा 36 चिकित्सकों द्वारा की गई। परीक्षण, जांचें व दवाइयां सब निःशुल्क थे। चिकित्सकों के सहयोग के लिए 19 सहयोगी व 62 स्वयंसेवकों ने सेवाएं प्रदान कीं। शिविर के बाद गुरुदेव के सान्निध्य में सेवादारों का बहुमान किया गया। इस शिविर में कुल 51 नेत्र रोगियों का चयन करके आचार्य महाप्रज्ञ नेत्र चिकित्सालय, वागदरी में भेजा गया। जहां उनके ऑपरेशन संपन्न हुए।

दत्त जयंती उत्सव व जनसेवा

दत्त जन्मोत्सव के पावन अवसर पर गुरुकृपा से शिव त्रिलोचन आश्रम, चपोरा में 'दिगंबरा दिगंबरा श्रीपाद वल्लभ दिगंबरा' मंत्र का 12 घंटे का अखंड नाम जाप हुआ। पूर्णाहुति के पश्चात् पालकी यात्रा निकाली गई।

एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट द्वारा चपोरा आश्रम से 15 किलोमीटर दूर खैरझिटी में गरीब परिवारों में वस्त्र वितरण, पादुका (चप्पल-जूते) वितरण एवं वृद्धजनों को कंबल वितरित किये गये। वहीं खैरझिटी व कंचनपुर के छोटे स्कूली बच्चों को प्रसाद भी बांटा गया।

शिव दत्त केन्द्र-नागपुर एवं शिव स्मित केन्द्र - केलिफोर्निया में भी हर्षोल्लास से व श्रद्धापूर्वक दत्त जयंती के आयोजन संपन्न हुए।

दत्त जयंती वृंदावन आश्रम

लक्ष्य की ओर

जिज्ञासा-समाधान

प्रशांत खानवालकर, ग्वालियर

प्रश्न : गुरुदेव के दर्शन के समय मन में सहज यह भाव आता है कि कुछ भेंट किया जाए। कभी लगता है कि कुछ राशि अर्पित करूं, कभी अन्य साधकों को देखता हूं तो अन्नदान, वस्त्रदान की इच्छा होती है। वस्तुतः क्या ठीक है?

उत्तर : साधक व सद्गुरु का संबंध किसी भेंट-पूजा पर आश्रित न होकर भावों का लोक है। हां, एक शिष्य होने के नाते अपने पास जो भी है उसे सद्गुरु कृपाप्रसाद मानते हुए कुछ भेंट करने से आत्मीय प्रसन्नता होती है। 'सब कुछ दिया है आपने, भेंट करूं क्या नाथ?' यह मूल बात है। फिर भी भौतिक रूप में कुछ भेंट करने का मानस हो तो सद्गुरु हमारा मन और मान रखते हुए सब स्वीकारते हैं। धन राशि

का अपना महत्व है। यह सरल तरीका भी है। अन्नदान यानी ओटी का अपना महत्व है। एक संन्यासी सद्गुरु की दैनिक आवश्यकता है-भिक्षा। हम जो अनाज भेंट करते हैं वही उनका आहार बनता है। इसलिए इसकी उपयोगिता स्वयंसिद्ध है। वस्त्रदान भी इसी श्रेणी में है।

गुरुगीता में तो आया है कि 'शरीरमिन्द्रिय प्राणं, सद्गुरुभ्यो निवेदयेत्।' इसके अलावा सच्ची भेंट तो अपनी क्षमता व अक्षमता यानी हम जैसे हैं उस वास्तविक रूप में स्वयं को सद्गुरु चरणों में समर्पित कर देना है। इसका आशय गहरे में तो यही है कि न मेरा कोई कर्म, न मेरा कोई विचार और न ही मेरा अस्तित्व अलग से कुछ है। यानी 'सब कुछ दिया है आपने।' सद्गुरु के मंतव्य, सद्गुरु की भावना को अक्षरशः मानते हुए अपना आग्रह त्यागना ही सर्वश्रेष्ठ भेंट है। वैसे बाकी भेंट भी श्रद्धानुसार ठीक है पर असल में सद्गुरु तो साधक का मन चाहता है।

साधकों के ध्यान-अनुभव

डॉ.अनंत सक्सेना, उदयपुर

बात सन् 2004 की है। प्रभु बा की लखनऊ में साप्ताहिकी संपन्न हो चुकी थी व उनका प्रवास अगले स्थान के लिए हो चुका था। मैं भी अपने रूटीन काम में लग गया था। मैं जिस हॉस्पीटल में काम करता था उसके मेडिकल सुपरिटेंडेंट डॉ. हाफिज थे। मेरी उनसे अच्छी फ्रेण्डशिप थी।

उनको एक्यूट पैंक्रियाटिटीज हो गई थी और एब्डोमन में काफी इंफेक्शन हो गया था। यहां तक कि किडनी फेल्योर, लीवर फेल्योर हो गये थे। उनके दोनों लंग्स में पानी भरने लगा था। ब्लड प्रेशर भी कम होने लगा था। हालत उनकी रेगुलर गिरती ही जा रही थी।

मैं उनसे मिलने जाता रहता था। एक बार जब मैं मिलने गया तो वे निराश होकर कहने लगे कि अब मैं नहीं बच पाऊंगा। मुझे गुरुदेव का स्मरण हो आया। मेरा गुरुदेव पर दृढ़ विश्वास है। मैंने कहा कि मैं प्रभु बा से रिक्वेस्ट करूंगा, आप ठीक हो जायेंगे।

उसी दिन मैंने आश्रम में फोन लगाया। उस समय आश्रमवासी साधक रमण भाई ने फोन अटेण्ड किया। उन्हें डॉ. हाफिज के बारे में सारी बात बताई। उन्होंने कहा कि वे प्रभु बा को खबर कर देंगे। डॉ. हाफिज की हालत बदतर होती जा रही थी तो मैंने रात को वापस आश्रम में फोन किया। रमण भाई ने उत्तर दिया कि उन्होंने खबर कर दी है पर अभी तक कोई जवाब नही आया है। अगले दिन मैं फिर डॉ. हाफिज को देखने उनके रूम में गया। डॉ हाफिज सो रहे थे। मैं उन्हें निहार रहा था। अचानक मुझे लगा कि किसी ने मेरे सिर को ग्रिप कर दिया है। मैं डॉ. हाफिज को पैर

से सिर व सिर से पैर तक धीरे-धीरे देखता गया। ऐसा लग रहा था कि मेरे सिर को पकड़कर यह मुझसे करवाया जा रहा है। मैंने उस समय डॉ. हाफिज के इंटरनल ऑर्गन्स को अपनी आँखों से देखा। उनकी इंटस्टाईन, लीवर, किडनी, पेंक्रियाज, लंग्स आदि सब। जैसा ऑपरेशन या पोस्टमार्टम में दिखाई देता है ठीक वैसा ही। सोनोग्राफी में इमेज दिखती है परंतु मैंने तो रियल में यह सब देखा। मुझे बहुत अद्‌भुत सी फिलिंग हो रही थी क्योंकि ह्यूमन आई से तो यह पोसिबल ही नहीं हैं कि स्कीन और क्लॉथ को पेनट्रेट करके देख पाएं। उन्हें इंटस्टाईन पैरालिसिस जैसा हो गया था। इससे मैं बहुत देर तक वापस नॉर्मल ही नहीं हो पाया।

उसके बाद मैंने वापस आश्रम में फोन किया। रमण भाई ने बताया कि प्रभु बा ने कहा है कि मैंने (प्रभु बा ने) डॉ. हाफिज को देख लिया है। उनकी हालत अच्छी नहीं है। उनका अच्छा इलाज चलने दो तथा भस्म भी दो। तब मुझे समझ में आया कि आश्रम से प्रभु बा ने मुझे उपकरण बनाकर डॉ. हाफिज का निरीक्षण कर लिया। उसके बाद उन्हें भस्म दी और इलाज भी चला। जल्दी ही उनकी फुल रिकवरी हो गई। ठीक होने पर वे गुरुदेव के दर्शन करने लखनऊ से शिवपुरी आए। प्रभु बा के आगे हम दोनों का अहोभाव निःशब्द था। कितने करुणामय हैं मेरे सद्‌गुरुदेव !

सूचनाएं

- 7 जनवरी 2023 को चैतन्य-दिवस का आयोजन शिवपुरी आश्रम में। यह दिन वासुदेव कुटुंब के साधकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी दिन प.पू. प्रभु बा को अपने श्रीसद्गुरु से अनुग्रह मिला था। एक दृष्टि से देखा जाय तो हमारे साधन-वृक्ष का मूल यही दिवस है।
- चैतन्य-दिवस से पूर्व 31 दिसंबर से 7 जनवरी तक 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' महामंत्र की अखण्ड नाम जप साप्ताहिकी।
- उक्त साप्ताहिकी के दौरान प.पू. प्रभु बा के साथ सुबह-शाम ध्यान एवं सत्संग का दुर्लभ अवसर। आश्रम-सेवा का भी सौभाग्य।
- महाशिवरात्रि पर्व आगामी 18 फरवरी को है इसकी सूचना बाद में।
- अपने केन्द्र, किसी स्थानीय साधक के आवास या आश्रम पर होने वाले कार्यक्रमों के वीडियो के अलावा फोटो एवं समाचार भी अवश्य भेजें तथा फोटो के कैप्शन भी लगाकर भेजें।
- इस ई-पत्रिका के संबंध में अपने विचारों से अवगत करा सकते हैं और कोई नया स्थायी स्तंभ आपको उचित लगे तो सुझाव भी दें।

ध्यातव्य : 'शिव—गरिमा' पत्रिका में वर्णित विचार व सिद्धांत वासुदेव कुटुंब की अवधारणा के अधीन हैं तथा प.पू. प्रभु बा से दीक्षित साधकों के लिए ही उपयोग हेतु हैं।

एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट द्वारा संचालित काशी शिवपुरी आश्रम, ईंटालीखेड़ा, तहसील—सलुम्बर, जिला—उदयपुर (राज.) से प्रकाशित 'शिव—गरिमा' ई—मासिकी, निःशुल्क।
संपादक : स्वामी गुरुराजेश्वरानंद , मार्गदर्शक : गुरुपुत्र दत्तप्रसाद एवं स्वामी हृदयानंद (स्वामी दादा), ग्राफिक्स: प्रमोद सोनी
संपर्क सूत्र : आश्रम : 9929681423,
स्वामी दादा: 9950502409, संपादक : 9414740814

www.prabhubaa.com